

ममनस्य न ॥ ८ ॥ धनधान्ययथा (नष्ट) विशासं ग्रह नष्ट । आहवयवहा नष्ट
 कृत्वैव सदाहवत् ॥ ॥ धनयाहा सयाय संथहव ता द्वा द्वकाय संथहव विद्या
 सु सन संथहव नेय ता न संथहव यवहात्र याय संथहव धनगास वरुणा नावगा
 सदा ॥ ९ ॥ नगुवृः सदृशीमाणा नगुवृः सदृशीयिमा । यस्माद्विनिमदायार्त्तं सं
 दधिद्रव्यं ॥ ॥ गुवृव मासव समुत्थमहव गुवृ (अष्ट) ववृ या सिर्न गुवृ (अष्ट)
 दानप्राजसा इद्वदसंसावदा दान धर्मासावगववपीवगुवृन धर्मेनगुवृ (अष्ट)

१३७ चोपोल्लर्यार नेवारीमा पो स दित

ASHA ARCHIVES 3534

॥ १० ॥ मातागंगा-समनीर्थ विनायक प्रभव च । पुत्र ४ कंठावसमनीर्थ मातागंगाः
यूनः पुनः ॥ ॥ मामहं गंगावसमकुल्य ववहं युकप्रभागीर्थव समकुल्यः
पुत्रहं कंठावभागीर्थव समकुल्यहं मामहकया वारंवार गंगावसमकुल्य
हवथर्थ ॥ ११ ॥ विद्यात्रयं कृत्वा नां क्षमात्रयं गयस्त्रिनी । ककिनां स्वत्रयं ना
त्रीत्रयं यतिवगा ॥ ॥ मरुदस्त्रात्रयं त्रयं विद्या गयस्त्रियात्रयं त्रयं क्षमा
ककिलं गत्रयात्रयं त्रयं त्रयं मिसाजनयात्रयं त्रयं यतिवगाहवर्ग ॥ १२ ॥

नचविद्यासमावधु नचयाधिसमाधीयुः नचायत्यसमास्त्रहा नचदेवायवववं ॥ ॥
वधुहं विद्यावसमकुल्यभाय गंगुहं याधिवसमकुल्यभाय स्त्रहाहं कायश्चात्रव
समकुल्यभाय देवहं विद्यावसमकुल्यभाय ॥ १३ ॥ विद्यायवासेनामिह कय्यामि
गुहं वृच । अरुहं येषामिह धर्ममिह यवगुह ॥ ॥ यत्र दंश्यामिगुहं विद्याः
क्षयामिगुहं कवाक नोगियामिगुहं डायधि यवलाकयामिगुहं धर्मं यथ्यासिय ॥ १४ ॥
हलाधिगवियविद्या अरिहं रुजनेवेष । विषागमिहियविहस्य रुहस्यगवुगीविष ॥ ॥

गाकात्रं अस्या समयागदास स्याविद्यां शालशत्रुं अदिकया दं नवनास नया अर्नैव
 हवै थमगासन हवनास गविसमसैव हवै अथयात्यास कनात वृषहवै ॥ १७ ॥
 अनास्यासेरुगादिद्या नित्यहासेरुगासुय । कविधनदगाकर्ण रुखदासेरुगानुम ॥ ॥
 गाकालं अस्या समयागदास स्याविद्यां शालशत्रुं कावननिमित्त मययकै हवै यनना
 स मिसाजनै शालशत्रुं मखयुसापिगनास वृक्षालशत्रुं युजामरुिनहास वाजां शाल
 हवै ॥ १८ ॥ यस्ययुशानविद्याना नग्नानवयतिर्गभ्रं अंधकावकूलकस्य नहवद्वयस

वरी ॥ ॥ गवक्रमनूयायाकायायनिथशत्रु विद्यांसिमहव गूलं महव यतिगं महव धमः
 याहंस अंधकावहव गथवद्वयमामदु नशीथीखिहसंवतन धर्थ ॥ १९ ॥ मेवरी दीयकयं
 दूयरागं विदीयकः ॥ मेलायदीयकाधर्मः सयुक्तकूलदीयकः ॥ ॥ वाहिया (गाराहव) चंदः
 मान दिनया (गाराहव) सयनि रेलायया (गाराहव) धर्मन कूलवा (गाराहव) सयुक्तकायनः
 ॥ २० ॥ जनगावायनगायं यमुविद्याययवृति । अन्नदातारुयगागा यथेगवितवंस तां ॥
 ॥ ॥ थमजत्मविद्वं थमयगियादयाकं थमविद्यागासुसंरुं नयमं वनकं रुयसः

॥ २३ ॥ युगमु विविधिः शास्त्रे निर्यासं नैव गतं ब्रह्म नीतिरूपवृद्धिसंयन्ता रुवन्निखर्वैयुजिगा
॥ ॥ रुनि लोकयनिम्य न थव कायमावायनिजा जवय विविधिगासुस नीतिरूपननसंयन्त्र
रुवनास थम्ययुवय समरु लोकनं मान्यायीव युजायायीवय ॥ २४ ॥ यथैयुजकिमावस्य
मयायैराववा रुकशय थनयुजिगा वाजा य० युजदिनदिन ॥ ॥ रुवसयानकक्षयासृषिस्य
न थव कायदास रुच्छियुग शास्त्रसञ्ज्यासयादून शास्त्रमसवदास संसावयासवाकूवयीवः
सास्त्रसवसा वाजानं युजानं मान्यायुजायायीव थनयानिमित्तिन दिनयनि सास्त्रसञ्ज्यासयाः

वधकं हनं ॥ २५ ॥ गुणवृद्धिर्गणयन् विमात्रायै यथाजनं । विप्रियन्तनघं परिगमवंदितं ।
विविधजिह्वा ॥ ॥ गुणविद्यायां यम यत्ननया कृतं आतापननकृपया जनः । गथाध्यायसा
दृष्ट्वाप्यमदृष्ट्वा घं न कृष्यायकावतयाने मूलमवदसा कृतं धर्म्मस्य ॥ २६ ॥
नवप्रसन्नारुवर्णवृत्तं त्रयस्यारुवर्णगुणैः । गुणस्यारुवर्णकृतं हानस्यारुवर्णकमा ॥ ॥ स
नूयया आरुवर्णवृत्तं त्रय त्रयया आरुवर्णगुणैः । गुणया आरुवर्णकृतं हानया आरुवर्णकमा
॥ २७ ॥ गुणैर्गुणैर्गुणैर्गुणैः । सिद्धिः यत्तु सिमाविद्या हागपुत्रु सिमाधर्म्म ॥

वृषमखतदं न गुणवदहन कलमखत यय गीलमारावयहन विशामखतदं सिद्धियद
 न धनमखतयय दलुहुक यहन ॥ २८ ॥ अगुणस्य दनं वयं अगीलस्य दनं कलं असिद्धि
 दनं विद्या अरागस्य दनं धनं ॥ ॥ गुणमदतदास वयं दललहन गीलमारावमदतदास क
 लललहन असिद्धिदतदास सयाविद्यादतदहन दलुहुकमदतदास धनदललहन ॥ २९ ॥
 गुणं लुपयतवयं गीललुपयतकलं सिद्धिलुपयतविद्या रागलुपयतधनं ॥ ॥ वृष
 या अरुवत गुण कलया अरुवत गीलमाराव विद्याया अरुवत सिद्धि धनया अरुवत

दलुहुक ॥ ३० ॥ सकलयाजयकन्या पूरुविद्या सुयाजयत वयमनयाजयकमुमि
 नधमं सुयाजयत ॥ ॥ कन्यायाजयधनं रिग्वकलस काययाजयधनं विद्या
 म गलुयाजयधनं आयदास मिहयाजयधनं धमने ॥ ३१ ॥ नात्युच्चनिख
 वामन नातिनिभ्रावमातनं वदसायिसहायानां नातियावामहादति ॥ ॥ उया
 यन समवयवर्त अतिनामदाव याताव अतिकामथ क सागवसमूदं यावयायजिव ध
 गाथं हानिलाकधनिसन उजागयायमाव ॥ ३२ ॥ अक्षकं नयनदहन याद

नेकाकननव। अथर्वदिवसंकृत्यात्। दाना। अथयनकर्मसु॥ ॥ अविच्छिन्नदिन
 यतिं। निवाककृयूनंगमक वायूनंगमक यवासविवातनंगमक आखवकृयूनंगमक कि
 थंडागयायमाव दानयायथथं किनश्रुष्टाद्विनंगमक॥ ३३ ॥ याज नानां सरुसा
 नि वृजनयाकियिपीठिका। अगर्कं वैनगयायि यदमर्कनगकुनि॥ ॥ अममवस्य २
 वदान सयागिन दोवकि याजन हायरु ह्यवागमस्त्रिस्तथादान गवृद्धवियाव
 क॥ ३४ ॥ गने४वथा४गनेविद्या गने४यवतिमावृहा। गने४धर्मश्रीकोमथ्ययाय

मथ्यगने४गने४॥ ॥ धनमादासयायसंधरुव विद्यागामुसनमंधरुव पर्वग
 र्थजायसंधरुव दानधर्मयायसंधरुव श्रीश्यायावावयायसंधरुव धनतादगा
 सनमजिव सावाहनरुजिव॥ ३५ ॥ गुनसुखयाविद्या पूष्टकनधर्मनवा।
 अथवाविद्याविद्या चरुधर्मनयवखन॥ ॥ विद्यागामुवायरुव सुताडयवानन
 पगमद्र गुनयाक सदायादाव वायवृगा गुनयागदयविद्याव वृगा अथवा
 विद्यान विद्यादवाववृगा धनसुताडयवानन मेवतानमद्र॥ ३६ ॥ नकाकवे

॥ १०८ ॥
॥ १०९ ॥
॥ ११० ॥

यनि दानदियदुयनि गीलसुसुवदयनि धनसुसुसुन यथिवीधववयंतव ॥ १०८ ॥
असावयीदुसेसाव सावसुतदुसुयै। काणीवासुसुगीसैग। गीगसुसुसुसुयुजनी ॥ ॥
असावसंसावस धयतासावदत कुकुधवसा काणीवासुवनि सत्यवययनिसव सैग।
याय गंगलखन मराधव पूजायाय धयतासावदत सादुन ॥ १०९ ॥ ॥
ॐ निबानकसावसंयदु रगीय४ गंगकीसमाई ॥ ११० ॥ ॥ सम्वत् १८३१ मा।
द्युगुक् यीवमी पूर्वरुद यडुगुरुदनदु गितथाग गुक्ताव धकुक धवा

नक शास्त्र संयुक्त्यादं शास्त्रविद्या अष्टकिवादाव्या विष्णुमन्त्रस्यात्मज गानि
युक्त्याग स्यननिमित्तिनशास्त्रविद्या धर्मरूपीवाय गविलमन्त्रयावशादसः
पठाकवाक्य विष्णुमन्त्र कोधयादं तमवासीत्वादस सिधायकं वायावविद्या ॥
धर्मवस महावाजा वीरमदीत्यमर्त्यदेव मानिगलाधियति नाश्वर ॥ ॥

माहा २३
(ॐ नमः श्रीमंशनाथाय ॥ मंशनीलाकनाथा जिनवचमकटा जम्बवावजसत्तः मे
य

वितावजयाति सखवलयकवा वादवाक्ययाला । वृद्धावेवाचनाय विरुवण
नमिर्ग दीदनिगवदाया रुक्मसवथिसिद्धि विमनसमनस मन्त्रलंवाधिसत्तु ॥
॥ १ ॥ रुक्मसवथिसिद्धि विमनसमनस मन्त्रलंवाधिसत्तु ॥ १ ॥ रुक्मसवथिसिद्धि
वीर्यगलमथना तर्किवाजामहासा । अक्षास्यवत्तकुरु यतिदिनमववा गंधदुसि
यमादी रुक्मसवथिसिद्धिः विमनसमनस मन्त्रलंवाधिसत्तु ॥ २ ॥ संघीयः
लासुवन्धु गुणगलनिवया वाधिविरुसविरु वाधियावन्धुसिद्धि विजितक

विमला दन्तकानीलदण्ड । वृद्धासा वल्लभा विजितजिनगुणा सर्वसत्त्वानुकर्या ७
शुभासवार्थसिद्धिः विमनसमनस मङ्गलं वाधिसन्तु ॥ ७ ॥ यक्षचक्रवर्तना रुद्र
नवरुद्रकटी हनसंलवना मावीविमात्रमात्रा सकलरुयद्रा योतवर्णविवक्षा
मावीविमात्रमात्रा सकलरुयद्रा सावधिदीयवजा शुभासवार्थसिद्धि विमन
समनस मङ्गलं वाधिसन्तु ॥ ४ ॥ गन्धर्वीजांशुवीच रुद्रगृहीतकना खड्गया
गोकुलाया वानादीवजरुद्रा अजियदसूधना धर्मधामनवीच कयूवीहानकुरु धः

अतिदिगुकरा खड्गयागांवल्लिव शुभासवार्थसिद्धि विमनसमनस मङ्गलं वाधिसन्तु ॥
॥ ७ ॥ वेनामाल्यासुगीता यथिगतिनवत्र गावल्लिधूपवजा वगालिगन्धवजा यः
हसितवदना गीगतिराशुगात्रा लक्ष्मीवृद्धस्यवाधे सकलरुयद्रा सावधिदीयः
वजा शुभासवार्थसिद्धि विमनसमनस मङ्गलं वाधिसन्तु ॥ ७ ॥ वेनामाल्याधर्मच
क्र पथितजिनवत्र पर्वतचक्रकृट् गावस्त्रीवृवीनिव कीर्तिनिदिगना कोकनवा
धिवृक्ष श्रीमद्वेगावगात्रं सुवनवनमिरं गीतवक्रपुरुष शुभासवार्थसिद्धिविम

रु. म. व्युत्पत्तनक

न सुमनसु मङ्गलं वाधिसनु ॥ १ ॥ ॥ छन्द इव च यमं ध्वजमपि हि नं वाचनामस्यः
कर्म वागादीयल्लकर्मं मुनिवचनवचनं वरुणं अनियानं वृक्षानां याति दायं सवननवनमि
नं ह्यस्य वास्य विवास्य उश्वासवार्थसिद्धिं विमनसुमनसु मङ्गलं वाधिसनु ॥ २ ॥
॥ निधी लोकध्वनराधिगं मङ्गलाष्टकस्मार्गं समाप्तं ॥ ॥ गुरु ॥ ॥ ॥

(३) स म न्दो ३ संक ७ एश वांछा नवा नाथे र सहवान्त के धी या
र सरु प्रिय यना गमया मात मोती भाद्य सी प थि नायान
शै व ज्ञे य

२४ नमोस्तु कनाथाय ॥ मुक्ताय नमः ॥ एतन्मयं कलसं सर्वस
त्वात्सुपूर्वमुत्तमवदनामृत्तुयुत्तमम् । सर्वकलानामकृढाकलम्
हिमार्गम् । त्वय्यज्ञाननिवृत्तुषितकलानामिह ॥ ॥ समस्तलोक
यातुः प्रत्ययदानविद्ययनमध्वनत्वं । नार्थिष्वक्षेत्रसायुक्ति
सिंया नन्दमार्थिम् । नमोस्तु कनाथाय । त्वय्यज्ञाननिवृत्तुषितकलानामिह
प्रतिष्ठाता । त्वय्यज्ञाननिवृत्तुषितकलानामिह ॥ ॥ समस्तलोक
यातुः प्रत्ययदानविद्ययनमध्वनत्वं । नार्थिष्वक्षेत्रसायुक्ति
सिंया नन्दमार्थिम् । नमोस्तु कनाथाय । त्वय्यज्ञाननिवृत्तुषितकलानामिह

वा न ६२ किं त्वं शत्रुं विंता म नि कु लु न न ६२ स्यं वि आ क स म सु लं
क नं गु गु या त का ङा वि आ त ॥ ५ ॥ त्वं ह्य न ना सि ब ल तो वि त स
व स त्वा स सा न र्प क ति मि ना लु व म ~~स~~ स त्वा आ ला
कि तं य थ म न र्प ल वा वि मा ङ्ग तं य द्वा या नि व ल मा ङ्ग द द न
मा मि ॥ ७ ॥ कृ न या न स क ष मा स्नान या ना सि ध र्क स म सु न
ध रं कृ नि मि ति न अ न सा थ स सा न सा त दा स स क र्यं न
य इ ङ्गं वृ काल स स म्प ड स वा ङ वि स्यं वा ङ्व स त्वा ला क या

त को व न र लू य का ङा न न कां त थ थि ला कं ६२ न व द्वा
या नि त्वं न म सु त ॥ १ ॥ ग त्वा व न न न र कं वृ वृ वि वि म
६२ सि ति कृ तं हृ इ वि सा त लू त स व द्वा य ना न किं स क न इ थ
वि ना स र्यं ति तं य द्वा या नि न न का ङि स म न मा मि ॥ ७ ॥
६२ न व कू ल वा न वं मा ७ विं ची न न क स वि आ दा व धृ ति
न रं व श या व व द्वा व द्वा व न कू ल या न वा दा व स त्वा ला क या
द स स इ र व म द य क रं थ थि ग व द्वा या नि त्वं वृ वि वि न ल क मा

यद्वा द्रुथयिष्ययद्वा नित्वं न स ह्यन॥ ७॥ संताप्यनीक
नयानकएग्नैरमिहं धम्मो नाकमिबध्वागतकामत्रयिष्यक
मिहमिमिबध्वा सितागनिमिहत्वं यद्वा नित्वं सो सनतं न
नामि॥ ७॥ थर्थननकएमिभाया वृद्धमइतयनिनाजासक
वडावडा नैरास्वामिस्का मत्रयिष्यत्रवृद्धा वया वृद्ध
मनत्रकएमि विनासशलायकं कदाचिद्धमनाजा आदिन
वडावृद्धन कास्यं यत्र मेध्वलत्वं वडा न स ह्यनया तथार्थ

ध्वना कि भाव क्य द्वा नि तुं न म स्का ल ॥ १ ॥ ग ता व य न
 व त लू य म ना ह रा य सु ला के ना थ म ए क ल स र्व स त्वा इः
 न वं त व स ना मि वि मु र्ति इ र्वं तुं व द्वा या नि ह त कि वि
 ष त्वा त्त मा मि ॥ ७ ॥ भु ति म ना हो न सू ब या ड वि श्रा न्त
 क ना थ ख मा ला क उ क्षा न या क स म स्का ल क या इ ख भा व
 व मु र्ति य इ वि व थ रिं ग व द्वा या नि न या व भा व कं या ड द्वा
 न म स्का ल ॥ ८ ॥ तुं वं त लो क ग त शं क न ना व स्य न सु चि मु र्वं